Iyadat Ke Waqiat (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 246
Weekly Booklet : 246

सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़यादत फ़रमान के वाक़िआ़त

इ़यादत के वाक़िआ़त

सफ़ह़ात 24

मेरे बेटे रोओ नहीं ! 01

ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी की इ़यादत 12

दिल का फल 16

दर्द में पोशीदा तीन बातें 20

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दामत बरकातुहुमुल आलिया

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه इन शाअल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **इयादत के वाक़िआत**
सिने त़बाअ़त : **1443** हि., **2022** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**इयादत के वाक़िआत**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद1, गुजरात

MO. 9898732611 • Email :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

इयादत के वाक़िआ़त

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 22 सफ़्हात का रिसाला : "**इयादत के वाक़िआ़त**" पढ़ या सुन ले उसे मुसल्मानों का हमदर्द बना, आफ़तों और मुसीबतों से उस की ह़िफ़ाज़त फ़रमा कर बे ह़िसाब मग़्फ़िरत से नवाज़ दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** पाक के अ़र्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन शख़्स **अल्लाह** पाक के अ़र्श के साए में होंगे। अ़र्ज़ की गई **: या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **!** वोह कौन लोग होंगे ? इर्शाद फ़रमाया **:** ﴿1﴾ वोह शख़्स जो मेरे उम्मती की परेशानी दूर करे ﴿2﴾ मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करने वाला ﴿3﴾ मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला। (البدور السافرۃ، ص131، حدیث:366)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मेरे बेटे रोओ नहीं !

उम्मुल मुअमिनीन, मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं **:** हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक नौ जवान को अपनी मह़फ़िल में मौजूद न पाया तो सह़ाबए किराम

से उन के बारे में पूछा : अ़र्ज़ किया गया : उन को सख़्त बुख़ार है, इस सबब से सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان उन के जवानी में ही इन्तिक़ाल कर जाने का गुमान करते थे, उम्मत के ग़म ख़्वार आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان से इर्शाद फ़रमाया : चलो ! हम उस की इ़यादत के लिये चलते हैं। चुनान्चे ग़मज़दों के ग़म दूर करने वाले ख़ुश अख़्लाक़ आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब उन के पास पहुंचे तो वोह रोने लगे। आप صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें इर्शाद फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! रोओ नहीं ! क्यूं कि मुझे जिब्राईल (عَلَيۡهِ السَّلَام) ने ख़बर दी है कि बुख़ार मेरी उम्मत के लिये जहन्नम से हिस्सा है। (کشف الغمہ فی فضل الحمی للسیوطی، ص13) **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

سُبۡحٰنَ اللہ ! उन जिस्मानी बीमार मगर बख़्त बेदार (या'नी ख़ुश क़िस्मत) सह़ाबिये रसूल के मुबारक क़दमों पर दुन्या की सारी तन्दुरुस्तियां क़ुरबान हों, जिन की इ़यादत के लिये त़बीबों के त़बीब, **अल्लाह** पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले आए। किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

सरे बालीं उन्हें रह़मत की अदा लाई है ह़ाल बिगड़ा है तो बीमार की बन आई है

(ज़ौक़े ना'त, स. 250)

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! अपनी उम्मत से प्यार करने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बयान किये गए वाक़िए़ में अपने सह़ाबी की ग़ैर मौजूदगी पर ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करने और इ़यादत करने का अन्दाज़े मुबारक सद करोड़ मरह़बा ! काश ! हम भी अपने

मुसल्मान भाइयों की ख़बर गीरी करने (ख़ैर, ख़ैरिय्यत पूछने) की आ़दत बनाएं, जहां इस से रिज़ाए इलाही के लिये की जाने वाली इ़यादत से सवाबे अ़ज़ीम की ख़ुश ख़बरियां मिलेंगी वहीं एक मुसल्मान के दिल में आप की महब्बत भी बढ़ेगी, जैसा कि **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी मरीज़ की इ़यादत करता है तो एक ए'लान करने वाला आस्मान से ए'लान करता है : तू ख़ुश हो कि तेरा येह चलना मुबारक है और तू ने जन्नत में अपना ठिकाना बना लिया है।

(ابنِ ماجہ، 2/192، حدیث:1443)

एक और ह़दीसे पाक में है : जो शख़्स किसी मरीज़ की इ़यादत के लिये जाता है तो **अल्लाह** पाक उस पर पछत्तर हज़ार (75,000) फ़िरिश्तों का साया करता है और उस के हर क़दम उठाने पर उस के लिये एक नेकी लिखता है और हर क़दम रखने पर उस का एक गुनाह मिटाता है और एक दरजा बुलन्द फ़रमाता है यहां तक कि वोह अपनी जगह पर बैठ जाए, जब वोह बैठ जाता है तो रह़मत उसे ढांप लेती है और अपने घर वापस आने तक रह़मत उसे ढांपे रहेगी। (معجم اوسط، 3/222، حدیث:4396)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सुन्नत पर अ़मल की निय्यत से अपने मुसल्मान भाइयों की इ़यादत कीजिये और ख़ूब सवाब लूटिये और हां ! इ़यादत सिर्फ़ जानने वाले ही की करना सुन्नत नहीं बल्कि इमाम अबू ज़करिय्या यह़या बिन शरफ़ नववी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इ़यादत करना हर एक से सुन्नत है चाहे उसे जानता हो या न, क़रीबी हो या अजनबी।

(شرحِ مسلم للنووی، 13/31)

अगर इस लिये बीमार पुरसी की, कि मैं जब बीमार होउं तो वोह भी मेरी तीमार दारी के लिये आए तो सवाब नहीं मिलेगा।

नमाज़ी भाइयों को तलाश कीजिये

मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : "नमाज़ में अपने भाइयों को न पाओ तो उन्हें तलाश करो। अगर बीमार हों तो उन की इ़यादत करो। अगर तन्दुरुस्त हों तो उन्हें झिड़को।" (झिड़क्ने से मुराद जमाअ़त छोड़ने पर तम्बीह करना है कि इस में सुस्ती नहीं करनी चाहिये।) (احیاء العلوم، 1/258)

इमाम साह़िबान को मदनी मश्वरा

अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपनी मुन्फ़रिद किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" में फ़रमाते हैं : मस्जिदों के पेश इमामों की ख़िदमतों में मश्वरतन अ़र्ज़ है वोह अपने मुक़्तदियों की निगरानी किया करें कि उन में से कौन जमाअ़त से नमाज़ पढ़ता है और कौन नहीं, अगर कोई नमाज़ी किसी नमाज़ में ग़ैर ह़ाज़िर हो तो उस की दुकान या घर पर जा कर या फ़ोन कर के उस की ख़बर निकालें, बीमार हो गया हो तो इ़यादत करें और सुस्ती की वज्ह से न आया हो तो नेकी की दा'वत दें और तमाम इस्लामी भाइयों को भी येह अन्दाज़ इख़्तियार करना चाहिये। नीज़ इस्लामी बहनों को भी चाहिये कि वोह अपने बच्चों के अब्बू हों तो उन को भी और दीगर मह़ारिम पर जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने के मुतअ़ल्लिक़ इन्फ़िरादी कोशिश करती

रहें। सगे मदीना عُفِیَ عَنۡہ की ख़्वाहिश है कि काश ! सब के सब नमाज़ी और नमाज़ी बल्कि तहज्जुद गुज़ार बन जाएं। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 223)

जमाअ़त का जज़्बा बढ़ा या इलाही ! हो शौक़े तहज्जुद अ़ता या इलाही !

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

तरग़ीब के लिये सरापा तरग़ीब बन जाइये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़रूरी नहीं कि शदीद बीमारी हो तो ही इयादत की जाए बल्कि ब ज़ाहिर छोटे नज़र आने वाले मरज़ या ज़ख़्म व तक्लीफ़ पर किसी से हमदर्दी करते हुए ग़मज़दा चेहरा बना कर ख़ैर ख़्वाही करेंगे तो इस से भी उस का दिल ख़ुश हो सकता है और اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم महब्बत बढ़ने का सबब होगा। बानिये दा'वते इस्लामी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का मा'मूल है जब भी किसी बीमार हाल या ऐसे इस्लामी भाई को देखते हैं कि जिस के हाथ पर मा'मूली पट्टी बंधी हो तो हमदर्दी व ख़ैर ख़्वाही फ़रमाते हुए हाल मा'लूम करते और दुआए आफ़ियतो शिफ़ा से नवाज़ते हैं। आशिक़ाने रसूल की अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ से इयादत या दुआ पा कर ख़ुशी दीदनी (या'नी देखने के क़ाबिल) होती है। हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी अपने एक प्यारे सहाबी की आंखों में तक्लीफ़ होने के सबब इयादत फ़रमाई। जैसा कि ह़दीसे पाक में है : ह़ज़रते ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी आंखें आ गईं (या'नी आशोबे चश्म हो गया) तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी इयादत फ़रमाई। (ابوداود، 3/250، حدیث:3102)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि मा'मूली बीमारी में भी बीमार पुरसी (या'नी इ़यादत) करना सुन्नत है जैसे आंख या कान या दाढ़ का दर्द कि येह अगर्चे ख़त़रनाक नहीं मगर बीमारी तो हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/415)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत का पैग़ाम

रबीउ़ल आख़िर 1438 हि. ब मुत़ाबिक़ जनवरी 2017 को होने वाले एक मदनी मश्वरे में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने ज़िम्मेदाराने दा'वते इस्लामी को कुछ इस त़रह़ अपनी नसीह़तों से नवाज़ा : "तमाम इस्लामी भाई अगर्चे वोह दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से मुन्सलिक हों या न हों उन की ख़ुशी ग़मी में ह़िस्सा लिया करें बिल ख़ुसूस ग़मी में इ़यादतो ता'ज़ियत करने में कोताही न किया करें। सुख में ह़िस्सा नहीं लेंगे तो इतना बुरा नहीं लगेगा लेकिन दुख में ह़िस्सा नहीं लेंगे तो बहुत बुरा लगेगा।" (मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मदनी फूल)

सुन्नतें शाहे मदीना की तू अपनाए जा दोनों आ़लम की फ़लाह़ इस में मेरे भाई है

(वसाइले बख़्शिश, स. 496)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मुसल्मानों पर कमाल मेह़रबान

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! "इ़यादत व ता'ज़ियत" करना हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बड़ी प्यारी सुन्नत है और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए पाक के अत़राफ़ में रहने वाले सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के हां तशरीफ़ ले जा कर भी इ़यादत फ़रमाते, येह आप

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कमाल दरजे की आ़जिज़ी व इन्किसारी और रह़्म दिल होने की दलील है। ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ह़ाज़िर न होते उन के बारे में पूछते, अगर कोई बीमार होता तो उन की इ़यादत फ़रमाते या कोई मुसाफ़िर होता तो उन के लिये दुआ़ करते, अगर किसी का इन्तिक़ाल हो जाता तो उन के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ फ़रमाते और लोगों के मुआ़मलात की तह़क़ीक़ात कर के उन की इस्लाह़ फ़रमाते। (جمع الوسائل، 177/2)

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत मौलाना जमीलुर्रह़मान रज़वी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ करते हैं :

हर दम है तुम्हें अपने ग़ुलामों पे इनायत दिन रात का येह कार है सरकार तुम्हारा

(क़बालए बख़्शिश, स. 47)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन रिवायात में हम हुज़ूर के ग़ुलामों के लिये भी मदनी फूल है कि हम भी इ़यादत किया करें क्यूं कि येह हुक़ूक़े मुस्लिमीन में से है। जब **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सरवरे दो जहां हो कर अपने सह़ाबए किराम के हां इ़यादत के लिये तशरीफ़ ले जा सकते हैं तो हम आ़शिक़ाने रसूल को भी इस अदाए मुस्त़फ़ा को अपनाना चाहिये, रह़मते दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अपने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के हां तशरीफ़ ले जाने के मज़ीद वाक़िआ़त मुलाह़ज़ा कीजिये और निय्यत कीजिये कि हमें भी जब किसी की बीमारी या फ़ौतगी वग़ैरा की ख़बर मिलेगी तो ख़ैर ख़्वाहिये उम्मत नीज़ हमदर्दी व दिलजूई के ह़सीन जज़्बे के तह़्त ह़त्तल इम्कान इस सुन्नते रसूल पर अ़मल करेंगे, اِنْ شَآءَاللّٰه।

"उम्मत के ग़म गुसार" के 11 हुरूफ़ की निस्बत से प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की इयादत फ़रमाने के 11 वाक़िआत

﴾1﴿ सात दिन से बुख़ार

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते जुन्नुख़ामा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के हां उन की इयादत के लिये तशरीफ़ ले गए, उन को बुख़ार था, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हें कब से बुख़ार है ? अ़र्ज़ किया : सात दिन से । इर्शाद फ़रमाया : तुम्हें इख़्तियार है, चाहो तो मैं तुम्हारे लिये दुआ़ करूं कि **अल्लाह** पाक तुम्हें आ़फ़िय्यत व शिफ़ा अ़ता फ़रमाए और अगर चाहो तो सब्र करो । तीन बार येह इर्शाद फ़रमाया, फिर फ़रमाया : तुम बुख़ार से इस ह़ाल में निकलोगे जिस त़रह़ तुम अपनी मां के पेट से (या'नी बिग़ैर किसी गुनाह के) निकले थे । उन्हों ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं सब्र करूंगा ।

(موسوعۃ لابن ابی الدنیا، 4/294، حدیث:245)

हर वक़्त तरक़्क़ी पे रहे दर्दे मह़ब्बत चंगा न हो मौला कभी बीमार तुम्हारा

(क़बालए बख़्शिश, स. 47)

शे'र का मत़लब : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! काश ! आप की मह़ब्बत हर वक़्त मेरे दिल में बढ़ती रहे और मैं आप की मह़ब्बत का ऐसा बीमार हो जाऊं कि कभी ठीक न होऊं ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सारी ख़ताओं को मिटा देता है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बुख़ार के फ़ज़ाइल के तो क्या कहने ! ह़दीसे पाक में है : बेशक **अल्लाह** पाक मोमिन के एक रात के बुख़ार की वज्ह से उस की सारी ख़ताओं को मिटा देता है । (شعب الایمان، 7/167، حدیث:9866) अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان उम्मीद करते थे कि एक रात का बुख़ार पिछली सारी ज़िन्दगी के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है ।

(شعب الایمان، 7/167، حدیث:9867)

जो हैं बीमार सिह़्ह़त के त़ालिब उन पे फ़रमा कर रब्बे ग़ालिब

तुझ से रह़मो करम की दुआ़ है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 136, 137)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

एक रात के बुख़ार के फ़ज़ाइल

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : एक रात का बुख़ार एक साल के गुनाह मिटा देता है । (موسوعۃ لابن ابی الدنیا، 2/239، حدیث:50)

ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ऐसा इस लिये इर्शाद फ़रमाया गया है कि बुख़ार साल भर की त़ाक़त ख़त्म कर देता है और येह भी कहा गया है कि "इन्सान के 360 जोड़ होते हैं" (ابو داود، 4/461، حدیث:5242) और बुख़ार का असर हर जोड़ पर होता है । (مصنف ابن ابی شیبہ، 7/99، حدیث:10922) लिहाज़ा हर हर जोड़ तक्लीफ़ महसूस

करता है जिस की वज्ह से हर जोड़ एक दिन का कफ़्फ़ारा बन जाता है।

(احیاء العلوم، 4/356)

येह तेरा जिस्म जो बीमार है तश्वीश न कर येह मरज़ तेरे गुनाहों को मिटा जाता है

(वसाइले बख़्शिश, स. 432)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾2﴿ जहन्नम की गरमी

अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते उ़र्वह बिन ज़ुबैर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हमारी प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا से रिवायत करते हैं (जो कि आप की ख़ाला थीं) कि एक बार नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़बीलए बनू ग़िफ़ार के एक शख़्स की इ़यादत के लिये तशरीफ़ ले गए। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बुख़ार जहन्नम की गरमी से है और येह जहन्नम से मोमिन का ह़िस्सा है।" फिर आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के लिये दुआ़ की : "ऐ **अल्लाह** पाक! इस की तमन्ना पूरी फ़रमा।" उन्हों ने एक आह भरी और उन का इन्तिक़ाल हो गया। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत में कुछ लोग ऐसे हैं कि अगर (किसी मुआ़मले में) वोह **अल्लाह** पाक पर क़सम खा लें तो **अल्लाह** पाक उन की क़सम ज़रूर पूरी फ़रमा दे।" (حلیۃ الاولیاء، 2/208، حدیث:1960، رقم:171) **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

नज्म की ऐ ख़ुदा आरज़ू है येही आ़शिक़े ज़ार की आबरू है येही
मौत के वक़्त सर उन के क़दमों में हो दीद होती रहे दम निकलता रहे

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! काश सद करोड़ काश ! जब हमारा दुन्या से वक़्ते रुख़्सत आए तो उस वक़्त नूर वाले आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपना नूरानी चेहरा चमकाते, नूर बरसाते तशरीफ़ ले आएं और हमें कलिमा पढ़ाएं फिर इन्ही ह़सीनो दिलकश जल्वों के अन्दर हमारी रूह़ जिस्म से जुदा हो जाए । ख़ुदा की क़सम ! बात ही बन जाए । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه यूं दुआ़ करते हैं :

या इलाही भूल जाऊं नज़्अ़ की तक्लीफ़ को शादिये दीदार हुस्ने मुस्त़फ़ा का साथ हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 132)

शे'र का मत़लब : ऐ मेरे प्यारे प्यारे **अल्लाह** पाक ! मैं मौत के वक़्त होने वाली तकालीफ़ भूल जाऊं अगर उस वक़्त तेरे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़सीन चेहरे का दीदार हो जाए ।

काश सद करोड़ काश ! ऐसा हो जाए । मेरे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी अपनी इस तमन्ना को अश्आ़र में कुछ इस त़रह़ लिखते हैं :

येह अ़र्ज़ गुनहगार की है शाहे ज़माना जब आख़िरी वक़्त आए मुझे भूल न जाना
सकरात की जब सख़्तियां सरकार हों त़ारी लिल्लाह ! मुझे अपने नज़ारों में गुमाना
जब दम हो लबों पर ऐ शहनशाहे मदीना तुम जल्वा दिखाना मुझे कलिमा भी पढ़ाना
आक़ा मेरा जिस वक़्त कि दम टूट रहा हो उस वक़्त मुझे चेहरए पुरनूर दिखाना

(वसाइले बख़्शिश, स. 352)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾3﴿ उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की इयादत

मुसल्मानों के तीसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : जब मैं बीमार हुवा तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी इयादत फ़रमाई और बार बार येह कलिमात पढ़े : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ، اُعِيْذُكَ بِاللّٰهِ الْاَحَدِ الصَّمَدِ الَّذِیْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ مِّنْ شَرِّ مَا تَجِدُ۔ **तरजमा : अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला है, मैं तुझे उस तक्लीफ़ के शर से जो तुझे है **अल्लाह** की पनाह में देता हूं जो अकेला है, बे नियाज़ है, न उस की कोई औलाद और न वोह किसी से पैदा हुवा है और न उस के जोड़ का कोई। (احیاء العلوم، 262/2) **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

जो दिल को ज़िया दे जो मुक़द्दर को जिला दे वोह जल्वए दीदार है उ़स्माने ग़नी का

हर सह़ाबिये नबी ! जन्नती जन्नती

चार याराने नबी ! जन्नती जन्नती

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾4﴿ मौला अ़ली की बारगाह में बुख़ार की ह़ाज़िरी

मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रत मौला अ़ली मुश्किल कुशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बीमार हुए तो रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन की इयादत के लिये तशरीफ़ लाए और उन से इर्शाद फ़रमाया : कहो : اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ تَعْجِيْلَ عَافِيَتِكَ اَوْ صَبْرًا عَلٰى بَلِيَّتِكَ اَوْ خُرُوْجًا مِّنَ الدُّنْيَا اِلٰى رَحْمَتِكَ۔ **तरजमा :** "ऐ **अल्लाह**! मैं तुझ से तेरी आ़फ़िय्यत की जल्दी का या तेरी त़रफ़

से आने वाली मुसीबत पर सब्र करने का या दुन्या से तेरी रह़मत की त़रफ़ निकलने का सुवाल करता हूं।'' जब तुम येह कह लोगे तो तुम्हें इन तीन (या'नी जल्द सिह़्ह़त याबी, अपने मरज़ पर सब्र या दुन्या से **अल्लाह** पाक की रह़मत की त़रफ़ लौटने) में से एक दी जाएगी। (مسند الشہاب، 2/333، حدیث:1470۔ احیاء العلوم، 2/262)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

5 बा बरकत दुआ

एक और रिवायत में है : सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा के पास तशरीफ़ लाए, आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को बुख़ार की शिद्दत की वज्ह से बिछोने पर क़रार नहीं आ रहा था। रसूले अन्वर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ अ़ली ! बेशक दुन्या में लोगों में सब से ज़ियादा आज़्माइशों में अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ السَّلَام) मुब्तला किये गए और (उन के बा'द) वोह लोग जो उन के साथ मिले होते हैं पस तुम्हें मुबारक हो कि इस में तुम्हारे लिये सवाब है। क्या तुम चाहते हो कि येह (बुख़ार) तुम से दूर हो जाए ? ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने अ़र्ज़ किया : जी हां ! इर्शाद फ़रमाया : तो फिर येह पढ़ो :

"اَللّٰهُمَّ ارْحَمْ عَظْمِیَ الدَّقِیْقَ وَجِلْدِیَ الرَّقِیْقَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فَوْرَةِ الْحَرِیْقِ یَا اُمَّ مِلْدَمٍ! اِنْ كُنْتِ اٰمَنْتِ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ فَلَا تَاْكُلِیِ اللَّحْمَ وَلَا تَشْرَبِیِ الدَّمَ وَلَا تَفُوْرِیْ عَلَى الْفَمِ وَانْتَقِلِیْ اِلٰى مَنْ یَّزْعَمُ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاِنِّیْ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُه"

तरजमा : "ऐ मौलाए करीम ! मेरी नर्म हड्डियों और बारीक जिल्द पर रह़्म फ़रमा और ऐ **अल्लाह** पाक ! मैं सख़्त गरमी से तेरी पनाह मांगता हूं, ऐ उम्मे मिल्दम ! (येह बुख़ार की कुन्यत है) अगर तू **अल्लाह** और आख़िरत पर ईमान रखती है तो मेरे गोश्त को न खा और मेरे ख़ून को न पी और तू मेरे मुंह की त़रफ़ न आ और न मेरे सर की त़रफ़ चढ़, तू उस की त़रफ़ चली जा जो गुमान करता है कि **अल्लाह** के सिवा कोई और ख़ुदा भी है, बेशक मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं और मुह़म्मद उस के ख़ास बन्दे और रसूल हैं।"

मौला अ़ली मुश्किल कुशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने जब येह दुआ़ पढ़ी तो उसी वक़्त मुझे बुख़ार से आ़फ़िय्यत दे दी गई। (या'नी बुख़ार चला गया) इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हम अहले बैत येह दुआ़ एक दूसरे को सिखाते थे, यहां तक कि अपनी ख़वातीन और बच्चों को भी सिखाते। जो भी येह पढ़ता अगर उस की मौत का वक़्त न आया होता तो उसे आ़फ़िय्यत दे दी जाती (या'नी बीमारी दूर हो जाती थी)।

(کتاب الدعاء للطبرانی، ص342، حدیث:1123)

आ़शिक़े मुस्त़फ़ा मुर्तज़ा मुर्तज़ा
सय्यिदुल औलिया मुर्तज़ा मुर्तज़ा
ख़ाइफ़े किब्रिया मुर्तज़ा मुर्तज़ा
मुत्तक़ी पारसा मुर्तज़ा मुर्तज़ा
दो गुनाह से दवा मुर्तज़ा मुर्तज़ा
मुझ को नेक दो बना मुर्तज़ा मुर्तज़ा
भीक दीजिये शहा मुर्तज़ा मुर्तज़ा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मरज़ दूर हो जाएगा

इमाम अ़ज्लूनी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी इ़यादत फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया : जिस बीमार की मौत का वक़्त अभी नहीं आया अगर तुम (उस के लिये) इन अल्फ़ाज़ के साथ **अल्लाह** पाक से सात मरतबा पनाह मांगो तो **अल्लाह** पाक वोह मरज़ उस से हलका (या'नी दूर) फ़रमा देगा। ''اَسْئَلُ اللهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَنْ يَّشْفِيَكَ'' **तरजमा :** मैं अ़ज़मत वाले, अ़र्शे अ़ज़ीम के मालिक से तेरे लिये शिफ़ा का सुवाल करता हूं।

(کشف الخفاء، 1/110، تحت الحدیث:348۔ کتاب الدعاء للطبرانی، ص339، حدیث:1113)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴿6﴾ बुख़ार को बुरा मत कहो

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! अल्लाह पाक के आख़िरी रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के साथ साथ, अपने अहले बैत (या'नी घर वालों) में से कोई बीमार होता तो उन की भी इ़यादत फ़रमाते। हमें बाहर वालों के साथ साथ घर वालों का ख़याल भी रखना चाहिये, कहीं ऐसा न हो कि सब दोस्तों से इ़यादत हो रही है और अपने घर में मौजूद बीमार मां या कमज़ोर अब्बूजान या बच्चों की अम्मी वग़ैरा बीमारी से निढाल पड़े हैं और उन से हमदर्दी और ख़ैर ख़्वाही करने का वक़्त ही नहीं।

एक मरतबा मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान, ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا को बुख़ार हो गया तो नबिय्ये रह़मत

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए (आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बुख़ार का ज़िक्र किया और इस को ना पसन्द जाना) तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक बुख़ार हुक्म का पाबन्द है तुम इसे बुरा न कहो लेकिन अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें ऐसे अल्फ़ाज़ सिखा दूं कि जब तुम वोह कहो तो **अल्लाह** पाक तुम से बुख़ार को दूर फ़रमा दे : (फिर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को वोही दुआ सिखाई जो ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को सिखाई थी) ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं ने जैसे ही येह कहा तो मेरा बुख़ार ख़त्म हो गया। (کنز العمال، الجزء:10، 5/41، حدیث:28508)

क्या मुबारक नाम है और कैसा प्यारा है लक़ब आ़इशा महबूबए महबूबे रब्बुल आ़लमीं
आयए तत़्हीर में है इन की पाकी का बयां हैं येह बीबी त़ाहिरा शौहर इमामुत्ताहिरीं

(दीवाने सालिक, स. 82)

ज़ौजए मुस्त़फ़ा सय्यिदह आ़इशा आ़बिदा ज़ाहिदा सय्यिदह आ़इशा
साजिदा साइमा सय्यिदह आ़इशा आ़रिफ़ा आ़दिला सय्यिदह आ़इशा
आ़लिमा आ़मिला सय्यिदह आ़इशा त़य्यिबा त़ाहिरा सय्यिदह आ़इशा
ख़ुल्द में दाख़िला सय्यिदह आ़इशा दो ख़ुदा से दिला सय्यिदह आ़इशा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

दिल का फल

﴾7﴿ ह़ज़रते बीबी फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की इयादत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! औलाद दिल का फल होती है, उन की तक्लीफ़ वालिदैन पर बहुत शाक़ (या'नी मुश्किल) होती है। बेटियां **अल्लाह** पाक की रह़मत होती हैं, येह मह़ब्बत करने वालियां होती हैं, जिस

किसी के हां बेटी पैदा हो उस को ख़ुश होना चाहिये कि **अल्लाह** पाक ने मुझे वोह ने'मत अ़ता फ़रमाई जो उस ने अपने प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भी अ़ता फ़रमाई, **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "बेटियों को बुरा मत कहो, मैं भी बेटियों वाला हूं। बेशक बेटियां तो बहुत मह़ब्बत करने वालियां, ग़म गुसार और बहुत ज़ियादा मेह्रबान होती हैं।"

(مسند الفردوس، 2/415، حدیث:7556)

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : बेटे ने'मत हैं और बेटियां नेकी हैं, **अल्लाह** पाक ने'मतों पर हिसाब लेता है जब कि नेकियों पर सवाब अ़ता फ़रमाता है। (بہجۃ المجالس، 3/763)

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! **अल्लाह** पाक के रह़मत वाले नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी प्यारी प्यारी शहज़ादी (या'नी बेटी) जन्नती ख़वातीन की सरदार ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا से बहुत मह़ब्बतो शफ़्क़त फ़रमाते थे।

ख़ादिमे नबी, ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि हम हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ मस्जिद में थे यहां तक कि सूरज तुलूअ़ हो गया, **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद से बाहर तशरीफ़ ले गए तो मैं पीछे हो लिया, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे फ़रमाया : "मेरे साथ आते जाओ।" ह़त्ता कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी प्यारी शहज़ादी ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا के पास तशरीफ़ ले गए, आप رَضِیَ اللهُ عَنْهَا सो रही थीं, **अल्लाह** के प्यारे मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ फ़ातिमा ! तुम्हें इस वक़्त तक किस चीज़ ने सोने पर मजबूर किया ? आप

رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने अ़र्ज़ किया : मैं कल रात से बुख़ार में हूं। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : वोह दुआ़ जो मैं ने तुम्हें सिखाई थी, उस का क्या हुवा ? अ़र्ज़ की : मैं भूल गई। इर्शाद फ़रमाया : यूं कहो :

''یَاحَیُّ یَا قَیُّوۡمُ بِرَحۡمَتِکَ اَسۡتَغِیۡثُ اَصۡلِحۡ لِیۡ شَاۡنِیۡ کُلَّہٗ وَلَا تَکِلۡنِیۡ اِلٰی اَحَدٍ مِّنَ النَّاسِ وَلَآ اِلٰی نَفۡسِیۡ طَرۡفَۃَ عَیۡنٍ'' **तरजमा :** ऐ ज़िन्दा, ऐ दूसरों के क़ाइम रखने वाले ! मैं तेरी रह़मत से तुझ से मदद मांगती हूं कि तू मेरे सारे कामों को ठीक फ़रमा दे और मुझे पलक झपक्ने की देर भी लोगों में से किसी के और अपने नफ़्स के ह़वाले न फ़रमा। (معجم اوسط، 2/368، حدیث:3565)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

नबी के दिल की राह़त और अ़ली के घर की ज़ीनत हैं
बयां किस से हो उन की पाक त़ीनत पाक त़ल्अ़त का
अगर सालिक भी या रब दा'वए जन्नत करे ह़क़ है
जो वोह ज़हरा की है येह भी तो है ख़ातूने जन्नत का

(दीवाने सालिक, स. 87, 89)

दुख़्तरे मुस्त़फ़ा सय्यिदह फ़ात़िमा ज़ौजए मुर्तज़ा सय्यिदह फ़ात़िमा
सालेह़ा पारसा सय्यिदह फ़ात़िमा मुत़्लक़न बा ह़या सय्यिदह फ़ात़िमा
त़य्यिबा त़ाहिरा सय्यिदह फ़ात़िमा साबिरा शाकिरा सय्यिदह फ़ात़िमा

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴿8﴾ ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ की इयादत

ख़ादिमे नबी, ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ फ़रमाते हैं :

ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को एक दुआ बताई, ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه जब बीमार थे तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन को येह दुआ इर्शाद फ़रमाई :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ سُبْحَانَ رَبِّ الْعِبَادِ وَالْبِلَادِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْداً كَثِيْراً طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْراً اِنَّ كِبْرِيَآءَ رَبِّنَا وَجَلَالَهٗ وَقُدْرَتَهٗ بِكُلِّ مَكَانٍ اَللّٰهُمَّ اِنْ اَنْتَ اَمْرَضْتَنِيْ لِتَقْبِضَ رُوْحِيْ فِيْ مَرَضِيْ هٰذَا فَاجْعَلْ رُوْحِيْ فِيْ اَرْوَاحِ مَنْ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنْكَ الْحُسْنٰى وَ بَاعِدْنِيْ مِنَ النَّارِ كَمَا بَاعَدْتَّ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنْكَ الْحُسْنٰى۔

तरजमा : अल्लाह पाक के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाही है और तमाम ता'रीफ़ें उसी के लिये हैं, वोही ज़िन्दा करता है और वोही मौत देता है और वोह ज़िन्दा है उस के लिये मौत नहीं। **अल्लाह** पाक है जो बन्दों और शहरों का रब है, हर ह़ाल में **अल्लाह** की ह़म्द है कसीर, पाकीज़ा और मुबारक ह़म्द। **अल्लाह** सब से बड़ा है बेशक हमारे रब की बड़ाई, उस का जलाल, उस की क़ुदरत हर जगह है। ऐ **अल्लाह**! अगर तू ने मुझे इस लिये बीमार किया है ताकि तू मेरी रूह़ को मेरे इस मरज़ में क़ब्ज़ कर ले तो मेरी रूह़ को उन रूहों के साथ मिला दे जिन के लिये तेरी त़रफ़ से जन्नत का वा'दा हो चुका और मुझे जहन्नम से दूर कर दे जैसे तू ने अपने दोस्तों को जहन्नम से दूर रखा जिन के लिये तेरी त़रफ़ से जन्नत का वा'दा हो चुका। (موسوعۃ لابن ابی الدنیا، 4/370، حدیث:159)

हर सह़ाबिये नबी ! जन्नती जन्नती

सब सह़ाबियात भी ! जन्नती जन्नती

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾9﴿ ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की इयादत

हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को अपनी मुबारक मह़फ़िल में न देखा तो उन के बारे में पूछा। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया गया कि वोह बीमार हैं। फिर **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन की इयादत के लिये तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : **अल्लाह** पाक तुम्हारा अज्र बढ़ाए और तुम्हें तुम्हारे दीन और जिस्म में आख़िरी वक़्त तक आ़फ़िय्यत अ़त़ा फ़रमाए, तुम्हारे लिये तुमहारे दर्द में तीन बातें हैं : पहली येह कि येह बीमारी तुम्हें अपने रब्बे करीम की ख़ूब याद दिलाएगी। दूसरी येह कि तुम्हारे पिछले गुनाह मिटा दिये जाएंगे। और तीसरी येह कि तुम दुआ़ करो जिस चीज़ की चाहो क्यूं कि बीमारी में मुब्तला शख़्स की दुआ़ क़बूल होती है। (موسوعۃ ابن ابی الدنیا، 4/249، حدیث:91)

एक और रिवायत में है : ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी इयादत फ़रमाई और फ़रमाया : **अल्लाह** पाक तुम्हें बीमारी से शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाए और तुम्हारे गुनाह बख़्शे और तुम्हारे दीन व जिस्म में आख़िरी दम तक आ़फ़िय्यत अ़त़ा फ़रमाए। (معجم کبیر، 6/240، حدیث:6106)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

वोह दुआ जिस का जोबन बहारे क़बूल उस नसीमे इजाबत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 302)

अल्फ़ाज़ मआ़नी : जोबन : रौनक़। **नसीम :** ख़ुश्बूदार हवा। **इजाबत :** क़बूलिय्यत।

शर्ह़े कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ करते हैं : **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक दुआ़ की रौनक़ ऐसी है कि उस का असर फ़ौरन ज़ाहिर हो जाता है, आप की मुबारक दुआ़ की क़बूलिय्यत की इस ख़ुश्बूदार और ठन्डी ठन्डी हवा पे लाखों सलाम हों।

हर सह़ाबिये नबी ! जन्नती जन्नती

सब सह़ाबियात भी ! जन्नती जन्नती

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾10﴿ बीमारी गुनाहों के मैल को दूर करती है

ह़ज़रते बीबी उम्मे अ़ला رَضِیَ اللهُ عَنْهَا जो कि ह़ज़रते ह़कीम बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللهُ عَنْه की फूफी और रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बैअ़त करने वाली नेक सीरत सह़ाबियात में से हैं, आप फ़रमाती हैं कि "जब मैं बीमार हुई तो रह़मते कौनैन, नानाए ह़सनैन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी इ़यादत फ़रमाई और मुझ से फ़रमाया : "ऐ उम्मे अ़ला ! ख़ुश ख़बरी ! सुन लो कि मुसल्मान की बीमारी उस से गुनाहों को इस त़रह़ दूर कर देती है जैसे आग लोहे और चांदी के मैल को दूर कर देती है।" (ابوداود، 3/246، حدیث:3092)

हर सह़ाबिये नबी ! जन्नती जन्नती

सब सह़ाबियात भी ! जन्नती जन्नती

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾11﴿ बुख़ार ने थका दिया है

रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अन्सारी सह़ाबिया की इ़यादत फ़रमाई और उन से पूछा कि कैसा मह़सूस कर रही हो ? तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया : बेहतर ! मगर इस बुख़ार ने मुझे थका दिया है। (येह सुन कर) हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : सब्र करो क्यूं कि बुख़ार आदमी के गुनाहों को इस त़रह़ दूर कर देता है जिस त़रह़ भट्टी लोहे के ज़ंग को दूर कर देती है। (معجم کبیر، 24/405، حدیث:984)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

हर सह़ाबिये नबी ! जन्नती जन्नती

सब सह़ाबियात भी ! जन्नती जन्नती

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मुसल्मान की बीमारी उस से गुनाहों को इस त़रह़ दूर कर देती है जैसे आग लोहे और चांदी के मैल को दूर कर देती है।

(ابوداود، 3/246، حدیث:3092)